उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद

वार्षिक रिपोर्ट 2013–2014 संस्कृति मंत्रालय

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र एक परिचय

भारत सरकार के संस्कृति विभागान्तर्गत स्थापित 7 क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों का महत्वपूर्ण कार्य लोक एवं जनजातीय लोककला विधाओं को उनकी मौलिकता के साथ प्रस्तुतियों के माध्यम से आगे बढ़ाना है। अपने स्थापना काल से वर्तमान समय तक सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित, सम्बर्द्धित व विकसित करने हेतु ये क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्र निरन्तर सतत् रूप से प्रयासशील है। वर्ष 2012–2013 में उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद द्वारा महत्वपूर्ण सांस्कृतिक आयोजन सम्पादित किये गये तथा प्रायोजित कार्यक्रमों में सहभागिता भी की गयी।

सांस्कृतिक गतिविधियां अप्रैल 2013 से मार्च 2014

''सुरांजलि''– नवप्रतिभाओं की खोज को समर्पित कार्यक्रम

संगीत के क्षेत्र में साधनारत नवप्रतिभाओं को मंच प्रदान करने हेतु आयोजित इस सांस्कृतिक प्रतिभा खोज कार्यक्रम के अन्तर्गत गायन–वादन व नृत्य के क्षेत्र में कार्य कर रहे प्रतिभाओं को उनकी प्रस्तुतियों के आधार पर तत्सम्बद्ध परीक्षकों द्वारा उन्हें चयनित किया जाता है। इन प्रतिभाओं को केन्द्र द्वारा अपने सांस्कृतिक कार्यक्रमों में मंच प्रदान किया जाता है। यह कार्यक्रम संगीत के क्षेत्र में परिश्रम कर रहे युवा–प्रतिभावान कलाकारों के लिए इस क्षेत्र में और भी परिश्रम से कार्य करने के लिए ऊर्जा भरने व उन्हें और कठिन परिश्रम के लिए प्रेरित करता है।

सुरांजलि की स्वर परीक्षा

सुरांजलि के प्रति लोगों की बढ़ती अभिरूचि और उसकी प्रसिद्धि को देखते हुए केन्द्र द्वारा 10 से 13 जुलाई 2013 तक केन्द्र के प्रेक्षागृह में सुरांजलि की स्वर परीक्षा आयोजित की गयी। इस आयोजन के लिए केन्द्र द्वारा समाचार पत्रों के माध्यम से

क्षेत्रान्तर्गत राज्यों में सूचना भी प्रसारित की गयी। 10 जुलाई 2013 से आयोजित 4 दिवसीय स्वर परीक्षा में 10 जुलाई को उ0प्र0, म0प्र0 व बिहार के 72 कलाकारों ने सुगम संगीत में प्रतिभागिता किया। 11 जुलाई को उ0प्र0, म0प्र0, उत्तराखण्ड एवं दिल्ली राज्य के 33 कलाकारों ने लोकसंगीत में तथा 12 जुलाई 2013 को बिहार एवं उत्तर प्रदेश के 12 कलाकारों ने लोक एवं शास्त्रीय नृत्य में भाग लिया। 13 जुलाई 2013 उ0प्र0, म0प्र0, उत्तराखण्ड एवं दिल्ली के 26 कलाकारों ने वाद्य–वृन्द वादन परीक्षा में भाग लिया। इस प्रकार केन्द्र द्वारा नवप्रतिभाओं के चयन हेतु आयोजित सुरांजलि के इस स्वर परीक्षा में देश के विविध राज्यों के 67 कलाकार उत्तीर्ण घोषित हुए तथा 143 प्रतिभागी अनुत्तीर्ण हुए।

बालोत्सव–15 दिवसीय प्रस्तुतिपरक ग्रीष्मकालीन बाल कार्यशाला

अवकाश के दिनों में बच्चों की अन्तर्निहित कलात्मक प्रतिभा को दिशा देने व अपनी परम्परा से जुड़ने को प्रेरित करने हेतु आयोजित यह कार्यशाला दो सत्रों में केन्द्र परिसर में आयोजित की गयी। 20 मई से 4 जून 2013 तक समकालीन नाट्य–लोकनाट्य एवं मूकाभिनय की कार्यशालाओं में 74 बच्चों ने सहभागिता किया और रंगकर्म की बारीकियों को सीखा। 25 मई से 5 जून 2013 तक पेपर कटिंग, संस्कार गीत, लोक चित्रकला, ऐपण, घूमर नृत्य, ढोलक वादन आधुनिक चित्रकला की कार्यशाला में 160 बच्चों ने भाग लिया। कार्यशाला के समापन के पश्चात् बच्चों की निर्मित कलाकृतियों की प्रदर्शनी भी लगायी गयी तथा केन्द्र के प्रेक्षागृह में नाट्य प्रस्तुतियों में बच्चों के अभिनय की संजीदगी ने उपस्थित लोगों को प्रभावित भी किया।

बोल बम– (श्रृंखला कार्यक्रम)

केन्द्र द्वारा लोकसंगीत एवं लोकनृत्यों का चार दिवसीय कार्यक्रम 'बोल बम' का आयोजन 15 से 18 अगस्त 2013 तक बिहार के बांका में किया गया। हरियाणा, बिहार व उत्तर प्रदेश के लोककलाकारों द्वारा अपने–अपने अंचल के लोकगीतों व लोकनृत्यों की प्रस्तुतियों द्वारा अपनी संस्कृति के मनोहारी रूप को प्रस्तुत किया गया।

कजरी उत्सव

केन्द्र द्वारा 18 व 19 अगस्त 2013 को लोक एवं उपशास्त्रीय गायन पर आधारित कजरी के दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन मीरजापुर में किया गया। लायन्स स्कूल प्रेक्षागृह, लालडिग्गी में आयोजित इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में लोगों की उपस्थिति उत्साहजनक थी।

वर्षा मंगल

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद, दिल्ली पर्यटन एवं ट्रान्सपोर्ट कारपोरेशन भारत सरकार के संयुक्त तत्वावधान में तीन दिवसीय 'वर्षा मंगल' कार्यक्रम का आयोजन 28 से 30 अगस्त 2013 तक दिल्ली हाट एवं प्रीतमपुरा में किया गया। लोक एवं जनजातीय कलाकारों से सजे–संवरे इस आयोजन में म0प्र0 के बुन्देलखण्ड का 'बरेदी' लोकनृत्य तथा इसी प्रदेश का जनजातीय नृत्स सैला, बिहार का झिंझिया, हरियाणा का फाग व घूमर एवं गुजरात के डांडिया लोकनृत्य की प्रस्तुतियां दी गयी। कुल 75 कलाकारों ने इस समारोह में भाग लिया। 14 सितम्बर 2013 को म0प्र0 के खण्डवा में भी वर्षा मंगल कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मांड उत्सव

राजस्थान के बीकानेर में केन्द्र द्वारा 13 व 14 सितम्बर 2013 को मांड उत्सव का आयोजन किया गया। राजस्थान के 17 मांड गायकों ने इस समारोह में भाग लिया। मुरारि शर्मा एवं दल द्वारा मांड गायन पर एकाग्र व्याख्यान व प्रदर्शन भी इस अवसर पर किया गया।

ध्रुपद समारोह

केन्द्र द्वारा 21 सितम्बर 2013 को बिहार के दरभंगा में ध्रुपद समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ध्रुपद के तीन घराने–बेतिया, दरभंगा एवं डांगर घराने के गायकों द्वारा ध्रुपद गायन किया गया। तीनों घरानों की गायकी इस कार्यक्रम

का आकर्षण थी। इस अवसर पर पद्मश्री गजेन्द्र नारायण सिंह द्वारा ध्रुपद गायकी की ऐतिहासिक यात्रा पर सारगर्भित व्याख्यान भी दिया गया।

आल्हा उत्सव

केन्द्र द्वारा आल्हा–ऊदल की धरती महोबा में द्विदिवसीय आल्हा उत्सव का आयोजन किया गया। आल्हा गायन के इस कार्यक्रम में भदोही के अर्जुन प्रसाद बिन्द, उन्नाव के रामलखन तिवारी, महोबा के बंशगोपाल यादव, सुल्तानपुर के दयाशंकर मिश्र, कौशाम्बी के होरी लाल तथा रायबरेली की सुश्री शीलू सिंह एवं दल ने भाग लिया।

स्वांग उत्सव

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र एवं हरियाणा कला परिषद के संयुक्त तत्वावधान में 26 से 29 सितम्बर 2013 तक कुरूक्षेत्र में इस उत्सव का आयोजन किया गया। हरियाणा के लोकनाट्य के रूप में प्रसिद्ध इस समारोह में दर्शकों की उपस्थिति उत्साह बढ़ाने वाली थी।

रागिनी उत्सव

केन्द्र एवं हरियाणा कला परिषद द्वारा संयुक्त रूप से 26 से 29 सितम्बर 2013 तक हरियाणा के रोहतक करनाल व हिसार में 'रागिनी उत्सव' का आयोजन किया गया। इस 4 दिवसीय रागिनी उत्सव में 28 रागिनी लोक गायकों ने गायन का कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस उत्सव में प्रसिद्ध रागिनी गायकों की उपस्थिति आकर्षण का केन्द्र थी।

लोकरंग – जनजातीय नृत्य समारोह

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र इलाहाबाद एवं जवाहर कला केन्द्र, जयपुर द्वारा जनजातीय नृत्यों पर आधारित कार्यक्रम 'लोकरंग' का आयोजन जयपुर में किया गया। 27 से 29 अक्टूबर 2013 तक आयोजित इस तीन दिवसीय समारोह में छत्तीसगढ़ के बटलू राम एवं दल द्वारा जनजातीय नृत्य 'ककसार एवं गैंडी' की प्रस्तुति

तथा धार, म0प्र0 के संजय एवं दल द्वारा 'भगोरिया' नृत्य, डिण्डौरी के सुमन प्रसाद एवं दल द्वारा 'सैला करमा' एवं उड़ीसा के सम्भलपुर से आये महेश कुमार पटेल एवं दल द्वारा 'सम्भलपुरी' जनजातीय नृत्यों की प्रस्तुतियाँ दी गयी।

<u>लोकदर्शन</u>–

केन्द्र द्वारा 28 से 30 अक्टूबर 2013 तक त्रिदिवसीय श्रृंखला सांस्कृतिक कार्यक्रम 'लोकदर्शन' का आयोजन बिहार के तीन जनपदों, कटिहार, अररिया व पूर्णिया में किया गया। स्थानीय जिला प्रशासन के सहयोग से आयोजित इस सांस्कृतिक यात्रा में हरियाणा से आये लोक कलाकारों ने ''फाग, घूमर एवं पनिहारी'' लोकनृत्यों की प्रस्तुतियों से जहां लोगों को बांधे रखा वहीं म0प्र0 से आये कलाकारों ने 'बधाई व बुन्देली गायन' एवं बिहार के लोक कलाकारों द्वारा जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले परम्परागत 'सोहर एवं भोजपुरी लोकगीतों की सुमधुर गायकी से उपस्थित दर्शकों–श्रोताओं को संस्कृति के बहुरंगी प्रवाह से परिचित कराया गया।

<u>रजत जयन्ती उत्सव</u> –(समापन समारोह)

भारत सरकार के क्षेत्रीय सांस्कृतिक केन्द्रों की स्थापना के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर 13 से 16 अप्रैल 2012 को हरियाणा के पंचकुला में प्रारम्भ हुए रजत जयन्ती वर्ष का समापन समारोह महाराष्ट्र के नागपुर में 10 से 16 नवम्बर 2013 तक आयोजित भव्य इन्द्रधनुषी सांस्कृतिक कार्यक्रमों व 'रंग–बिरंगी' आतिशबाजी के साथ सम्पन्न हुआ। लगभग सप्ताहपर्यन्त चले इस भव्य सांस्कृतिक आयोजन में देश की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक लोकनृत्यों, लोकगीतों एवं अन्यान्य पारम्परिक प्रस्तुतियों ने इस समारोह को जो भव्यता प्रदान की वह अपने आप में अविस्मरणीय है। इस अवसर पर उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा क्षेत्रान्तर्गत राज्यों से प्रसिद्ध कलाकार दलों को भेजा गया था। हरियाणा के शीशपाल चौहान एवं दल द्वारा प्रसिद्ध 'घूमर नृत्य' मथुरा के संजय शर्मा एवं दल द्वारा व्रज का प्रसिद्ध 'मयूर नृत्य' उत्तराखण्ड के पूरन सिंह वोरा एवं दल द्वारा 'छोलिया नृत्य, मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड

से आये सुधीर तिवारी एवं दल द्वारा 'बधाई' लोकनृत्य की प्रस्तुतियाँ दी गयी। केन्द्र द्वारा समापन समारोह में उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, बिहार व राजस्थान के 21 शिल्पकारों को भी उनके हस्तउत्पादों के साथ भेजा गया था।

राष्ट्रीय शिल्प मेला–2013

भारतीय हस्त उत्पाद एवं उससे जुड़े शिल्पकारों को एक सुदृढ़ बाजार उपलब्ध कराने एवं उनके उत्पादों को आम लोगों तक पहुँचाने की दृष्टि से केन्द्र द्वारा राष्ट्रीय शिल्प मेले का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाता है। शिल्पकारों के संरक्षण, सम्बर्द्धन एवं उनके विकास हेतु आयोजित इस मेले के प्रति आमजन का आकर्षण तो रहता ही है लोगों को इस राष्ट्रीय शिल्प मेले की प्रतीक्षा भी रहती है। वर्ष 2013 का यह मेला 20 से 29 दिसम्बर 2013 तक आयोजित था। इस दस दिवसीय मेले में देश के लगभग 16 राज्यों के वैविध्यपूर्ण हस्तउत्पाद व व्यंजन तो थे ही देश के विविध अंचलों के लगभग 500 लोककलाकारों ने अपने–अपने लोकनृत्यों, लोकगीतों के माध्यम से दर्शकों को भारतीय लोकसंस्कृति की झांकी का सुन्दर निदर्शन कराया। मेला प्रतिदिन प्रातः 11.00 बजे से रात्रि 9.00 बजे तक आमजन के लिए खुला रहता था।

माह का विशिष्ट आयोजन

देश की परम्परागत शिल्प विधा एवं कला के वैविध्यपूर्ण रूपों को विकसित करने एवं उसे प्रोत्साहन देने तथा उसके सुदृढ़ बाजार उपलब्ध कराने की दृष्टि से केन्द्र द्वारा प्रतिवर्ष परिसर स्थित शिल्पहाट में राष्ट्रीय शिल्प मेले का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2013 का शिल्प मेला 20 से 29 दिसम्बर 2013 तक उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के परिसर में स्थित शिल्प हाट में आयोजित हुआ। मेले में आगत जनसमूह एवं यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या तथा उनकी मांग को देखते हुए यह शिल्प मेला की अवधि एक दिन के शिलए बढ़ा दी गयी। वर्ष 2013 के शिल्प मेले में देश के विविध अंचलों से आये शिल्पगत उत्पाद अपनी विविधता के कारण आने वाले दर्शकों/क्रेताओं के आकर्षण का केन्द्र थे। मेले में 53 तरह के वैविध्यपूर्ण शिल्पगत

उत्पाद एवं 30 तरह के व्यंजन प्रदर्शित थे। स्थायी एवं अस्थायी रूप से 141 दुकाने शिल्प मेले में लगायी गयी थी। गत शिल्प मेलों की अपेक्षा वर्ष 2013 के राष्ट्रीय शिल्प मेले में देश के 16 राज्यों के शिल्पकारों ने इस मेले में सहभागिता किया। लगभग 500 लोक एवं जनजातीय कलाकारों ने अपने अपने पारम्परिक गीतों, नृत्यों से 10 दिवसीय शिल्प मेले को अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से न केवल आगत दर्शकों–पर्यटकों को देश की समृद्ध संस्कृति का दर्शन कराया अपितु मनोरंजन के साथ–साथ शिल्प मेले के सौन्दर्य को गरिमापूर्ण बनाने में अपना विशेष योगदान भी दिया।

2013 के राष्ट्रीय शिल्प मेले के प्रति लोगों के आकर्षण का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि 10/– रु0 प्रति टिकट की दर से कुल 67,059 (सरसठ हजार उनसठ) टिकटों की बिक्री हुयी तथा 6,70,590/– रुपये की आय केन्द्र को हुयी। शिल्पहाट का यह राष्ट्रीय शिल्प मेला गत अन्य शिल्प मेलो की शिल्पगत उत्पादों की बिक्री और शिल्पकारों को लाभ की दृष्टि से अच्छा था। सोशल मीडिया एवं फेसबुक पर मेले के सम्बन्ध में लोगों की प्रतिक्रिया पहली बार व्यापक रूप से सामने आयी और लोगों ने अधिकाधिक संख्या में आकर मेले को देखा, खरीददारी की तथा मुक्ताकाशी मंच पर प्रतिदिन सायंकाल होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से देश की सांस्कृतिक झांकी को देखा। लगभग 6000 लोगों ने फेसबुक पर शिल्प मेले के प्रति अपनी अपनी सकारात्मक वैचारिक प्रतिक्रिया दी। 10 दिवसीय शिल्प मेले में आगत शिल्पगत उत्पादों एवं पारम्परिक व्यंजनों के स्टालों पर कुल मिलाकर 1,7174850 (एक करोड़ इकहत्तर लाख चौहत्तर हजार आठ सौ पचास रुपये) की बिक्री हुयी। इस प्रकार मेले में लगे सभी स्टालों से पहली बार इतनी अधिक राशि आगत शिल्पकारों को प्राप्त हुयी। 20123 के शिल्प मेले में 39,88,781 (उनतालिस लाख अट्ठासी हजार सात सौ इक्यासी) रुपये की बिक्री हुयी थी जबकि शिल्पकारों को लाभ की दृष्टि से इस वर्ष के शिल्प मेले में 331 प्रतिशत की वृद्धि हुयी। यह वृद्धि आगत शिल्पकारों के उत्साहवर्द्धन और मेले के प्रति लोगों के बढ़ते झुकाव का संकेत देती है।

गोड़ा महोत्सव

संस्कृति मंत्रालय तथा लौह एवं स्टील मत्रालय, भारत सरकार द्वारा संयुक्त रूप से 4 से 7 जनवरी 2014 तक 'गोड़ा महोत्सव 2014' का आयोजन किया गया। इस महोत्सव में उत्तर प्रदेश के 36 लोककलाकार, मध्य प्रदेश के 60, हरियाणा के 20, उत्तराखण्ड के 30, पंजाब से 32, छत्तीसगढ़ एवं झारखण्ड से 30 तथा राजस्थान से 15 लोक कलाकारों को उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा प्रायोजित किया गया।

धरती धोराणी –श्रृंखला कार्यक्रम

केन्द्र द्वारा राजस्थान के सुदूर ग्राम्यान्चलों में 18 से 26 जनवरी 2014 तक इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बीकानेर, श्री गंगानगर, नोखा, हनुमानगढ़, चुरु, डूंगरगढ़ आदि स्थानों में धरती को समर्पित विविध प्रान्तों के लोकनृत्यों की प्रस्तुतियाँ हुई। इस सांस्कृतिक यात्रा में उत्तर प्रदेश के सोनभद्र के मानिकचन्द एवं दल द्वारा करमा नृत्य, म0 प्र0 के सागर से आये अरविन्द यादव एवं दल द्वारा बधाई नृत्य द्वारा हारुल एवं तोंदी लोकनृत्य, हरियाणा के रोहतक से आये राकेश गांगुली एवं दल द्वारा घूमर नृत्य, पटियाला के अमरेन्द्र सिंह एवं दल द्वारा भांगड़ा एवं जिन्दुआ लोकनृत्यों की प्रस्तुतियाँ की गयी।

चलो मन गंगा यमुना तीर–2014

केन्द्र का यह वार्षिक आयोजन अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। प्रतिवर्ष माघ पर्व के अवसर पर आयोजित होने वाला यह सांस्कृतिक कार्यक्रम इस वर्ष 27 जनवरी से 5 फरवरी 2014 तक आयोजित था। इस महत्वपूर्ण आयोजन में लोकगीत, लोकनृत्य एवं जनजातीय नृत्य, गायन व अन्य पारम्परिक प्रदर्शनकारी कलारूपों के कलाकारों ने अपने–अपने अंचल की सांस्कृतिक रूपों का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर 22 राज्यों के कलाकारों ने सहभागिता किया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ–साथ राष्ट्रीय कवि सम्मेलन का आयोजन एवं देश के शीर्षस्थ रचनाकारों का काव्यपाठ इस आयोजन का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रम था।

लोकधारा–2014

केन्द्र द्वारा 23 से 27 फरवरी 2014 तक उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर, चोपन, रावर्टसगंज एवं मुगलसराय में सांस्कृतिक श्रृंखला कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस यात्रा कार्यक्रम के अन्तर्गत राजस्थानी कलाकारों द्वारा घूमर, चरी व चकरी लोकनृत्य, उ0प्र0 के व्रज क्षेत्र का प्रसिद्ध मयूर नृत्य व बरसाने की होली, म0प्र0 का बधाई व नौरता एवं ढिमिरियाई लोकनृत्य, मणिपुर का लई–हरोबा, थांगटा एवं ढोलचोलम लोकनृत्यों तथा जनजातीय लोकनृत्यों की प्रस्तुतियाँ हुई।

माटी के रंग

लोक एवं जनजातीय लोकनृत्यों पर आधारित इस श्रृंखला सांस्कृतिक यात्रा कार्यक्रम का आयोजन 25 फरवरी से 3 मार्च 2014 तक किया गया। हरियाणा के विविध जनपदों–रोहतक, रेवाड़ी, सोनीपत, जींद, करनाल एवं कुरूक्षेत्र में लोक एवं जनजातीय नृत्यों की मनमोहक प्रस्तुतियाँ हुयी। माटी के रंग का आयोजन उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद एवं मल्टी आर्ट कल्चरल सेन्टर कुरूक्षेत्र द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। इस सांस्कृतिक श्रृंखला यात्रा कार्यक्रम में म0प्र0 के 13 जनजातीय लोक कलाकारों द्वारा 'सैला' जनजातीय नृत्य की प्रस्तुति की गयी। पश्चिम बंगाल के 15 सदस्यीय जनजातीय कलाकारों द्वारा 'छऊ' नृत्य, छत्तीसगढ़ से आये 13 जनजातीय कलाकारों द्वारा 'पंथी' नृत्य, की प्रस्तुति की गयी। पंजाब से आये 13 लोक कलाकारों ने जिन्दुआ लोकनृत्य की तथा राजस्थान से आये 10 जनजातीय कलाकारों ने 'तेरहताली' नृत्य की प्रस्तुति किया। 'माटी के रंग' सांस्कृतिक कार्यक्रम में लगभग 3000 दर्शकों ने भारत के विविध अंचलों के लोक एवं जनजातीय नृत्यों को देखा।

माँ तुझे सलाम

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर केन्द्र द्वारा 1 से 4 मार्च 2014 तक इलाहाबाद एवं कौशाम्बी जनपद के 14 स्थानों पर चार नाट्य दलों के माध्यम से नौटंकी एवं नुक्कड़ नाटकों का मंचन किया गया। इन प्रस्तुतियों के द्वारा महिलाओं एवं

बच्चों के स्वास्थ्य के प्रति संचेतित करने का प्रयास किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह का समापन 07 मार्च 2014 को आई.जी.एन.सी.ए. में केन्द्र एवं ग्लोबल होल्थ दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुआ।

सांस्कृतिक संध्या–राजभवन, लखनऊ

केन्द्र द्वारा 15 मार्च 2014 को राजस्थान लखनऊ में सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया। इस सांस्कृतिक संध्या में उ0प्र0 के व्रज क्षेत्र की फूलों की होली, असम का प्रसिद्ध बिहू नृत्य, हरियाणा का बम लहरी एवं फाग नृत्य तथा बांसुरी वादन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मासिक नाट्य प्रोत्साहन योजनान्तर्गत नाट्य प्रस्तुतियाँ

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नाट्य विधा के प्रोत्साहन हेतु संचालित मासिक नाट्य प्रोत्साहन योजना 4 वर्ष के अन्तराल के पश्चात् पुनः प्रारम्भ हुयी। उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा मासिक नाट्य प्रोत्साहन योजना के अन्तर्गत मासिक नाट्य प्रस्तुतियों का मंचन केन्द्र प्रेक्षागृह में प्रारम्भ कर दिया गया। इस क्रम में केन्द्र द्वारा प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक मौलियर लिखित एवं मुन्नी देवी द्वारा निर्देशित हास्य नाटक 'लाहौल विला कूवत' का मंचन किया गया। इस नाटक का मंचन उ0प्र0 के लखनऊ की संस्था आनन्दी सांस्कृतिक एवं सामाजिक संस्थान के कलाकारों द्वारा सम्पादित किया गया। केन्द्र द्वारा प्रतिमाह के दूसरे रविवार को रंगप्रेमी दर्शकों हेतु नाट्य प्रस्तुतियों का मंचन केन्द्र प्रेक्षागृह में होता रहेगा।

विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रम–भारत महोत्सव (क्यूबा)

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा देश की समृद्धशाली बहुरंगी संस्कृति से वैश्विक समुदाय को परिचित कराने के ध्येय से भारत महोत्सव का आयोजन 24 अक्टूबर से 5 नवम्बर 2013 तक क्यूबा (ह्वाना) में किया गया। मंत्रालय द्वारा उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र को उक्त भव्य एवं गरिमापूर्ण आयोजन का नोडल एजेन्सी तथा केन्द्र के निदेशक को नोडल आफिसर के रूप में मनोनीत किया गया।

क्यूबा में आयोजित यह समारोह समृद्ध एवं वैभवशाली भारतीय संस्कृति के विहंगम रूप को सात लोकरंजक प्रस्तुतियों के माध्यम से क्यूवा के जनसमुदाय के समक्ष प्रस्तुत किया गया। इन 7 प्रस्तुतियों में भारत की शास्त्रीय नृत्य शैलियों, दृश्य कला, साहित्यिक कार्यशाला, मेंहदी कला, योगोत्सव, व्यंजन एवं चलचित्र समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह का सजीव प्रसारण क्यूबा के दो सिनेमाघरों, रेडियो–टेलीविजन केन्द्रों से किया गया।

चलचित्र समारोह के उद्घाटन अवसर पर केन्द्र के निदेशक गौरव कृष्ण बंसल द्वारा भारतीय संस्कृति एवं उसके मौलिक सिद्धान्त 'वसुधैव कुटुम्वकम्द्ध एवं उसकी महत्वपूर्ण विशेषताओं का परिचय देते हुए उपस्थित क्यूबाई जनसमूह का स्वागत किया गया। भारत महोत्सव के अन्तर्गत आयोजित समारोह पर क्यूबा की जनता की प्रतिक्रिया को वहां के विविध चैनलों, रेडियो एवं समाचार पत्रों में प्रमुखता से स्थान दिया गया। भारत महोत्सव की ये प्रस्तुतियां न केवल क्यूबा की राजधानी ह्वाना में अपितु क्यूबा के पिनार–डी, रियो नाम के पश्चिमी प्रान्त में भी दिनांक 31 अक्टूबर को प्रदर्शित की गयी। स्थानीय समाचार पत्रों में इस कार्यक्रम के प्रति दर्शकों की सार्थक प्रतिक्रिया तथा बहुरंगी परिधानों से सज्जित कलाकारों के मनोहारी प्रस्तुतियों को प्रमुखता से स्थान दिया गया।

भारत महोत्सव का यह सांस्कृतिक आयोजन न केवल यशस्वी व अभिराम था अपितु यह महोत्सव अपने नैसर्गित सौन्दर्य से क्यूबाई जनसमुदाय से सीधे संवाद करता अपनी एक विशिष्ट पहचान बनाने में सफल सिद्ध हुआ तथा क्यूबा एवं भारत के सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने में अपनी भूमिका का सार्थक निर्वाह भी किया।